

श्रीमती मदलेन हेर्मन देबलिक

Smt. Madeleine Herman de Blic



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्रीमती मदलेन हेर्मन देबलिक

श्रीमती मदलेन हेर्मन देबलिक, पुडुचेरी में एक मानवीय सेवा संगठन, 'वॉलन्टेरिएट' की संस्थापक, एक जानी–मानी सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

2. आपका जन्म 15 मई,1934 में बेल्जियम में हुआ। आपकी रूचि बचपन से ही स्वार्थहीनता की ओर थी। आपने महात्मा गांधी, रमण महर्षि, फ्रैंक डेमिन, फ्रैंक सिराक और अब्बे पियरे से प्रेरणा प्राप्त की। आप अपनी आयु के बीसें वर्ष में 1962 में भारत आईं। आप औप्पलम गांव में गरीब लोगों के बीच रहीं, उनकी आवश्यकताओं को समझा। आपने 1966 में अपने कार्य को एक मूर्त रूप देने का निर्णय किया और सबसे गरीब लोगों के लिए कार्य करने के उद्देश्य से "वॉलन्टेरिएट" नाम से एक लाभ निरपेक्ष तथा धर्म निरपेक्ष संगठन को पंजीकृत करवाया। शीघ्र ही फ्रांस, बेल्जियम और भारत से अनेकों आदर्शवादी युवा आपके कार्यक्रम में शामिल हो गए। कुछ ही वर्षों में आपके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के मानदण्ड और कार्यक्षेत्र में बहुत अधिक वृद्धि हुई।

3. 'वॉलन्टेरिएट' फ्रांस और बेल्जियम में मित्रों से बच्चों के उत्तरदायित्व का प्रबन्ध करता है। इस समय, आपने लगभग 1500 बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और योगा, संगीत तथा नृत्य जैसे अतिरिक्त क्रियाकलापों का उत्तरदायित्व लिया हुआ है। इन बच्चों के लिए अनेकों व्यावसायिक प्रशिक्षण की कक्षाएं और कम्प्यूटर की कक्षाएं चलाई जाती हैं। बच्चों के लिए "नील इलम" नाम से एक गांव बनाया गया था जिसमें परित्यक्त बच्चे और झोपड़ियों में रहने वाले खानाबदोशों के बच्चे समीप के स्कूलों में जाते हैं। शहर का सूर्या बॉईज होम बेघर युवा लड़कों को आश्रय उपलब्ध करवाता है। आपने 2001 में निस्सहाय वरिष्ठ नागरिकों के लिए "अमैदी इलम" शान्ति का निवास स्थान नाम से एक आशियाने की स्थापना की थी। आपके स्वास्थ्य संबंधी देखभाल में डिस्पेंसरी, दन्तचिकित्सा और एक सचल क्लिनिक शामिल है। आपकी हृदय देखभाल इकाई में 200 नवजात शिशुओं और बच्चों के जीवन को बचाया गया है। आपने कुष्ठ रोग से ठीक हो चुके अपंग व्यक्तियों के लिए "एटलियर शांति" नाम से एक कपड़ा बुनने के केन्द्र की स्थापना की। इस केन्द्र में इन व्यक्तियों को हथकरघा से कपड़ा बुनने का प्रशिक्षण दिया गया और अब वे पुनर्वास केन्द्र के समीप आवासीय कालोनी में सम्मान के साथ रहते हैं।

4. 2004 में आई सुनामी के पश्चात् 'वॉलन्टेरिएट' ने पुनर्वास और पुनर्निर्माण के काम में सक्रियता से भाग लिया। आपने कराईकल और नागपट्टीनम जिलों के तीन गांवों में मकानों और बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए पर्याप्त धनराशि व्यय की। आपने अण्डमान और निकोबार के विभिन्न द्वीपसमूहों में वाटर प्यूरीफाइंग सिस्टम्स भी लगवाए।

5. कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्तियों के प्रति दी गई आपकी सेवाओं के लिए 1970 में आपको जिनेवा में एल्बर्ट स्वीजर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विकलांग व्यक्तियों के लिए किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य के लिए पांडिचेरी की सरकार ने वर्ष 2000 में 'वॉलन्टेरिएट' को एक सर्वश्रेष्ठ गैर–सरकारी संगठन के तौर पर सम्मानित किया गया है। 10 मई, 2013 में फ्रांस सरकार द्वारा आपको "शेवलियर डे ला लीजन डे' ऑनर से पुरस्कार किया। वर्ष 2014 में बेल्जियम के राजा ने आपको "ऑफिसर डे ला कॉरॉन पुरस्कार" से सम्मानित किया। पुडुचेरी की सरकार ने पुडुचेरी राज्य में आपके द्वारा दी जा रही जीवन–पर्यन्त सेवाओं के लिए 2015 में आपको प्रशस्ति–पत्र से सम्मानित किया है।

Smt. Madeleine Herman de Blic

Smt. Madeleine Herman de Blic, founder of 'Voluntariate', a humanitarian service organization in Puducherry, is a renowned social worker.

2. Born on 15th May 1934 in Belgium, Smt. de Blic had an altruistic bent from her early years. She was inspired by Mahatma Gandhi, Ramana Maharishi, Fr. Damien, Fr. Ceyrac and Abbé Pierre. She was in her twenties when she came to India in 1962. She lived among the poor in the village of Ouppalam, responding to their needs. In 1966, she decided to give structure to her work and registered 'Voluntariate', as a non-profit, secular organization to work for the poorest of the poor. Soon many idealistic young people from France, Belgium and India joined her programme. Over the years, the scale and scope of the services have grown enormously.

3. 'Voluntariate' organizes the sponsorship of children from friends in France and Belgium. At present about 1500 children are sponsored for education, health and extra activities like yoga, music and dance. Several vocational training classes and computer classes are offered for the children. A children's village, called Nila Illam, was set up where abandoned children and children of the gypsies live in cottages and attend the schools nearby. The Souriya Boys' Home in the city provides shelter to homeless young boys. In 2001 she opened a home, called, "Amaidi Illam" the abode of peace, for destitute senior citizens. Health care includes a dispensary, dental service and a mobile clinic. The Cardiac Care Unit has saved the lives of 200 infants and children. She had set up a weaving centre called Atelier Shanti, for handicapped persons who had been rehabilitated from leprosy. These persons were trained in handloom weaving and now live with dignity in the housing colony near the rehabilitation centre.

4. After the Tsunami in 2004, 'Voluntariate' actively participated in rehabilitation and reconstruction work. Smt. de Blic mobilized sufficient funds to construct houses and infrastructures in three villages in the districts of Karaikal and Nagapattinam. Water purifying systems were also installed in the different Islands of Andaman and Nicobar.

5. Smt. de Blic was honoured at Geneva with Albert Schweitzer award, recognizing her services for the people afflicted with leprosy disease in 1970. The Government of Pondicherry in the year 2000 recognized 'Voluntariate' as the Best NGO doing outstanding work for the handicapped. On May 10th 2013, Smt. Madeleine de Blic was awarded the Chevalier de la Legion d'honneur by the French government. The award of Officier de la Couronne was offered to her by the King of Belgium in 2014. The Government of Puducherry honoured her in 2015 with a Commendation Certificate, for her life-long service in the state.